ज़हीर कुरेशी

5 अगस्त, 1950 को जन्मे ज़हीर कुरेशी वर्तमान में हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लकार हैं। आपने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से मानव-जीवन की अनेकानेक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। जीवन के विविध आयाम आपकी ग़ज़लों में परिलक्षित होते हैं। अब तक आपके दस ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं—'लेखनी के स्वप्न', 'एक टुकड़ा धूप', 'चाँदनी का दु:ख', 'समन्दर ब्याहने आया नहीं है', 'भीड़ में सबसे अलग', 'पेड़ तन कर भी नहीं टूटा', 'बोलता है बीज भी', 'निकला न दिग्विजय को सिकन्दर', 'रास्तों से रास्ते निकले' तथा 'ज़िन्दगी से बड़ा ज़िन्दगी का समर'।

कविता सार

प्रस्तुत ग़ज़ल ज़हीर कुरेशी के 'समन्दर ब्याहने आया नहीं है' इस ग़ज़ल संग्रह में संकलित है। उनका यह ग़ज़ल संग्रह चर्चित रहा है। ज़हीर कुरेशी की ग़ज़लें वैचारिक ग़ज़लें हैं। वह शृंगारिक या संगीत उन्मुख ग़ज़लें नहीं हैं बल्कि आम आदमी के भावनाओं की प्रामाणिक अभिव्यक्ति है। उनकी ग़ज़लों में आधुनिकता, अंधानुकरण, पक्षधर न्यायप्रणाली और नारी शोषण की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। ग़ज़लकार भारतीय समाज एवं संस्कृति की सोच से परिचित है और व्यक्ति की तुच्छताओं तथा दिखावटी आदर्शवादिता को प्रस्तुत कर उनके सही रूप को पहचानने का आग्रह करता है। ग़ज़लकार ज़हीर कुरैशी ने दुष्यन्तकुमार की तरह ग़ज़ल की सामाजिक उपादेयता को दृष्टि में रखकर उसका प्रयोग परिवर्तनकारी हथियार के रूप में किया है। प्रस्तुत ग़ज़ल में ग़ज़लकार ने भारतीय समाज के निर्बल और सबल वर्ग का चित्रण किया है। नारी एवं दलित सदियों से शोषण और अत्याचार को सहते आए हैं। इन निर्बलों की मानसिक स्थिति, अन्तर्मन का द्वन्द्व, इनकी व्यथा-कथा को दर्शाते हुए ताकतवर ने इन्हें युगों से प्रताड़ित किया है, इस पीड़ा का चित्रण किया है। कथ्य की दृष्टि से विविध आयाम सहेजते हुए भाषा की परिपक्वता दृष्टिगोचर होती है।

ग़ज़ल

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

जब भी औरत ने अपनी सीमा-रेखा को पार किया,
पार-गमन से पहले, खुद को कितने दिन तैयार किया।

जनता को सहने की आदत है, सब कुछ सह लेती है,
किसी कष्ट को लेकर, जनता ने कब हाहाकार किया।

वो कारोबारी दिमाग था, सागर-तट पर जा बैठा,
लहरें गिन-गिनकर भी उसने लाखों का व्यापार किया।

द्वन्द्व-युद्ध जैसा, कुछ मन के अन्दर चलता रहता है,
क्यों चलता रहता है, तुमने इस पर कभी विचार किया।

वे केवल आरोपों की भाषा में बातें करते हैं,
अच्छे कामों का भी, उन लोगों ने गलत प्रचार किया।

जितनी ताकत होगी उतना ही तो बोझ उठाएगा,
उसने जो भी किया, स्वयं की क्षमता के अनुसार किया।

निर्बल कोई भी हो—औरत, हरिजन अथवा शीशमहल,
निर्बल पर ताकतवर ने, हर युग में अत्याचार किया।

राजेश जोशी

राजेश जोशी का जन्म 1946 में हुआ। उन्होंने कविता के साथ कहानियाँ भी लिखी हैं, किन्तु कविता के क्षेत्र में राजेश जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'एक दिन बोलेंगे हरे पेड़', 'मिट्टी का चेहरा', 'नेपथ्य में हँसी' आपके काव्य संकलन हैं। 'नेपथ्य में हँसी' आपका राजनैतिक संकलन है। इस संकलन के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

कविता सार

वर्तमान समय की व्यवस्था ही ऐसी है; जो इस व्यवस्था में शामिल नहीं होते या प्रामाणिकता से जीवन व्यतीत करते हैं, वे समाप्त कर दिये जाते हैं। आज सत्य, प्रामाणिकता शब्द अपराध बन बैठे हैं।

देगलूर महाविद्यालय,देगलूर

मारे जायेंगे

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे
मारे जायेंगे।

कठघरे में खड़े कर दिये जायेंगे, जो विरोध में बोलेंगे
जो सच-सच बोलेंगे, मारे जायेंगे
बर्दाश्त नहीं किया जायेगा कि किसी की कमीज हो
'उनकी' कमीज से ज्यादा सफेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जायेंगे

धकेल दिये जायेंगे कला की दुनिया से बाहर, जो चारण नहीं
जो गुन नहीं गायेंगे, मारे जायेंगे
धर्म की ध्वजा उठाने जो नहीं जायेंगे, जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिये जायेंगे

सबसे बड़ा अपराध है इस समय
निहत्थे और निरपराध होना
जो अपराधी नहीं होंगे
मारे जायेंगे।

डॉ. अनुज प्रताप सिंह

डॉ. अनुज प्रताप सिंह राजबहादुर सिंह का जन्म 1953 ई. में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जनपद के कुटीर ग्राम में हुआ। पिता स्व. राजबहादुर सिंह और माता स्व. मोतीराज कुँवरि सिंह के प्रबल आशीष से अध्यापक बनने तक की शिक्षा पूरी की और संस्कृत, मराठी, गुजराती, उर्दू, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषा ज्ञान अर्जित किया। पत्नी श्रीमती मीरा सिंह से विवाह के पश्चात लेखन कार्य में स्वयं को सौंप दिया। उन्होंने कविता, उपन्यास, समीक्षा में योगदान दिया। 'आम आदमी' (कविता संग्रह), 'गाँव का आखिरी मकान' (उपन्यास) इनकी चर्चित रचनाएँ हैं। राजा रनवीर सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी में प्राचार्य पद पर कार्यरत हैं।

कविता सार

प्रस्तुत कविता कवि डॉ. अनुज प्रताप सिंह के 'आम आदमी' काव्य संग्रह से संकलित है। विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र भारत का है। प्रजातंत्र में सबसे बड़ा महोत्सव चुनाव होता है। भारतीय प्रजातंत्र को सफल बनाने का कार्य निश्चित समय पर होने वाले चुनाव के द्वारा होता आया है। चुनाव के द्वारा वास्तव में प्रजातंत्र स्थापित होगा इस आशा के साथ हर चुनाव में आम आदमी शामिल होता है। लेकिन एक तय समय के बाद होनेवाली प्रक्रिया के अलावा उसे कुछ खास या विशेष प्राप्त नहीं होता। कवि की धारणा है कि चुनाव महज सरकार निर्माण करने की प्रक्रिया है। जहाँ सत्ता की लालसा हर प्रकार के आदमी को आकर्षित करती है। यही सत्ता की लालसा चुनाव के द्वारा उन्हें सरकार में परिवर्तित करती है।

देगलूर महाविद्यालय
देगलूर.

चुनाव

चुनाव में आदमी
जरूरत से ज्यादा शरीफ हो जाता है,
अथवा निहायत बेईमान हो जाता है,
चुनाव प्रजातन्त्र का हउवा है
अथवा धराऊँ नगाड़ा है
जो एक निश्चित समय पर
बजा करता है।

चुनाव प्रजातन्त्र की वह घूँटी है
जिसको पीकर जनता
अगले मतदान के लिए अमर हो जाती है
शायद जनसंख्या इसीलिए बढ़ रही है।

चुनाव सरकार पैदा करने की
चिर यौवना है—जिससे
नर-नारी, सम्पन्न या विपन्न
चरित्रवान वा चरित्रहीन
एक साथ आकर्षित होते हैं
अपनी योग्यता का पत्र देते हैं
फिर उसके सामने आसन लगाकर
बैठ जाते हैं।

निर्मला पुतुल

निर्मला पुतुल (जन्म : 6 मार्च, 1972) बहुचर्चित सन्थाली लेखिका, कवयित्री और सोशल एक्टिविस्ट हैं। गाँव दुधनी कुरुवा, जिला दुमका, सन्थाल परगना, झारखंड, भारत में जन्मी निर्मला पुतुल हिन्दी कविता में एक परिचित आदिवासी नाम हैं। आपने राजनीतिशास्त्र में ऑनर्स और नर्सिंग में डिप्लोमा किया है। सन्थाली, हिन्दी, नागपुरी, बांग्ला, खोरठा, भोजपुरी, अंगिका, अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया है।

'नगाड़े की तरह बजते शब्द', 'अपने घर की तलाश में', चर्चित काव्य संग्रह हैं। 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा!', 'क्या तुम जानते हो, क्या हूँ मैं तुम्हारे लिए...' आदि प्रतिनिधि रचनाएँ हैं। वे ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी, आदिम जनजाति महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरुकता के लिए विशेष कार्य कर रही हैं। निर्मला पुतुल फिलहाल निर्वाचित मुखिया हैं।

कविता सार

'माँ के लिए, ससुराल जाने से पहले', यह कविता निर्मला पुतुल के काव्य संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' से संकलित की गई है। इस काव्य संग्रह में आदिवासी जीवन, संस्कृति और समस्याओं के साथ स्त्रियों का सुख-दुःख अपनी पूरी गरिमा के साथ व्यक्त हुआ है। भारतीय संस्कृति में बेटी को पराया धन माना जाता है और उसे ब्याह के बाद माँ-बाप का घर छोड़कर ससुराल जाना पड़ता है। बेटी ससुराल तो चली जाती है परन्तु मायके में हर पल, हर जगह पानी के खाली घड़े में पानी की तरह उसकी यादें भरी रहती हैं। बेटी के मन की इसी व्यथा को प्रस्तुत कविता में व्यक्त किया गया है। बेटी माँ से कह रही है कि, ब्याह के बाद तुम्हारा घर-आँगन छोड़कर जाऊँगी पर आँगन में पड़े टूटे झाड़ू की तरह, डलिए में सटे गोबर की तरह और लकड़ियों के गट्ठर में बँधी रस्सी की तरह मैं हमेशा तुम्हारे साथ बँधी रहूँगी। बेटी को चिन्ता है, वह जाने के बाद माँ को पूछती है कि, माँ प्यासा घड़ा, मिमियानेवाली बकरियाँ और मेरे लगाए हुए पेड़ के फूल झरते हुए

देगलूर महाविद्यालय

माँ के लिए, ससुराल जाने से पहले

माँ!
चली जाऊँगी एक दिन छोड़कर
तुम्हारा घर आँगन
बरतुहारी जो कर आई हो
तुम
रस्सी में गाँठ-सी
बाँध जो आई हो मेरी शादी की तिथि!

पर क्या सचमुच
जा सकूँगी पूरी की पूरी यहाँ से?
आँगन में पड़े टूटे झाड़ू-सा
पड़ी रह जाऊँगी कुछ न कुछ यहाँ
बची रह जाऊँगी
गोहाल में गोबर फेंकने के डलिये में
सटे गोबर की तरह

~~पानी के खाली घड़े में~~
भरी रह जाएँगी मेरी यादें
जंगल से लाई लकड़ियों के गट्ठर में बँधी
रस्सी की तरह
बँधी रह जाऊँगी तुमसे

सोचती हूँ,
कौन दबाएगा अब तुम्हारे पाँव?
थके-माँदे वापस लौटे बापू को
कौन देगा अगुवाकर लोटा भर पानी?

कौन लाएगा जंगल से बीनकर लकड़ियाँ?
गायों को चराने कौन ले जाएगा?

प्यासा रह जाएगा घड़ा
खूँटे में बँधी बकरियाँ
मिमियाकर बुलाएँगी मुझे
और यह जो लगा रही हूँ पेड़
खिलेंगे एक दिन इसमें फूल
और मुरझा-मुरझाकर गिर जाएँगे
मेरे खोपे की आस में
तब क्या रोओगी नहीं मुझे याद कर?

आधी रात को
बेर गाछ पर बैठे,
पंडुक चिड़िया-सी
कू-कू कर कुहुकोगी नहीं
मेरी याद में?

बड़का भैया तो डूबा रहेगा हड़िया में
छोटका गुलेल लेकर पड़ा रहेगा
चिड़िया-चिरगुन के पीछे
बापू भी चला जाएगा खेत
तुम रह जाओगी निपट अकेली घर में
चटाइयाँ बुनती

और ऐसे में जब लगेगी प्यास
उठना चाहकर उठ नहीं पाओगी
बार-बार निहारोगी घड़े
झाँकोगी इधर-उधर

तब क्या याद नहीं आएगी मेरी?
कहो न माँ,
याद नहीं आएगी मेरी?

डॉ. कर्मानन्द आर्य

नई उमंग और नए जोश के लेखक तथा कवि कर्मानन्द सहदेवराज आर्य अपनी लेखनी से दलित स्वर को नाप रहे हैं। पिता श्री सहदेवराज आर्य और माता श्रीमती सुगना देवी की इच्छा से एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी. (हिन्दी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार) तक शिक्षा प्राप्त की।

वर्तमान में दक्षिण बिहार केंद्रिय विश्वविद्यालय, गया में सहायक प्राध्यापक हैं।

प्रकाशित पुस्तकें—'अयोध्या और मगहर के बीच', 'डरी हुयी चिड़िया का मुकदमा' (कविता संग्रह), 'अस्मितामूलक साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' (आलोचना), 'कविता बिहार : प्रतिनिधि दलित स्वर' (काव्य संकलन) और कविता एवं आलोचना लेखन के लिए 'भारतीय जन लेखक संघ' द्वारा सम्मानित किया गया है।

कविता सार

हिन्दी कविता आरम्भ से ही निरन्तर परिवर्तनशील विचारों की संवाहक कविता रही है। वर्तमान समय में हिन्दी कविता को सदियों से उपेक्षित और हाशिए पर रखे समुदायों ने अपनी विशिष्ट जीवनानुभूतियों को अभिव्यक्त कर समृद्ध किया। सदियों से साहित्य एवं जीवन प्रवाह के हाशिए पर रखे गए समुदाय का प्रत्येक रचनाकार शोषणमुक्त और समतामूलक समाज निर्माण की अपेक्षा करता है। समतामूलक समाज का सपना देखनेवाले हिन्दी कवियों में सर्वाधिक चर्चित कवि डॉ. कर्मानन्द आर्य हैं। डॉ. कर्मानन्द आर्य वर्तमान समय के महत्त्वपूर्ण दलित साहित्यिक तथा युवा चिन्तक हैं। इनकी रचनाओं में दलित जीवन की स्वानुभूतिजन्य सच्चाई अभिव्यक्त हुई है।

डॉ. कर्मानन्द आर्य की 'सपना' कविता व्यापक रूप से सामाजिक प्रतिबद्धता एवं राष्ट्र-निष्ठा को अभिव्यक्त करनेवाली कविता है। कवि मनुष्य के लिए बेहतर समाज व्यवस्था का सपना देखता है। यह सपना केवल कोरा सपना न होकर एक संकल्पचित्र है। यह संकल्पचित्र देश के नीतिनिर्धारकों को सुयोग्य दिशानिर्देश देता है। विश्व में जहाँ कहीं भी मानव समूह है वहाँ किसी न किसी प्रकार की विषमता

अवश्य देखा जा सकती है। भारतीय समाज भी इसका अपवाद नहीं है। कवि किसी भी प्रकार की मानव निर्मित विषमता का प्रखर विरोधी है, इसलिए वह विशेष रूप से सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक विषमता मुक्त समाज का सपना साकार होते देखना चाहता है। कवि यह भी जानता है कि यह कार्य सूरज के पश्चिम में उदित होने जैसा है। पर कवि को विश्वास है कि भारतीय संविधान में इस अविश्वसनीय संकल्प को पूरा करने की क्षमता है। कवि एक ऐसे बलशाली भारत का सपना देखता है जिसमें कोई भेद-भाव, वाद-विवाद तथा मतभिन्नता ना हो। भारत में सुसंवाद से सुव्यवस्था तथा सुशासन की कल्पना करते हुए कवि अपने आशावादी होने का परिचय देता है। संकुचित अस्मिता के स्थान पर राष्ट्रीय अस्मिता का भाव प्रत्येक हृदय में जागृत होने की आशा जगानेवाली यह कविता सच्चे अर्थों में राष्ट्रवादी विचारों की कविता है। समाज तथा राष्ट्र के प्रति आत्मीयता से ओतप्रोत यह कविता वास्तव में अकेले कवि का 'सपना' बनकर नहीं रहना चाहिए बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक का सपना बनना चाहिए। 'सपना' कविता का प्रत्येक शब्द कवि के सकारात्मक दृष्टि का परिचय देता है साथ ही सार्वभौम बलशाली प्रबुद्ध भारत का निर्माण करने की प्रेरणा देता है। प्रस्तुत 'सपना' कविता कवि डॉ. कर्मानन्द आर्य के 'डरी हुयी चिड़िया का मुकदमा' काव्य संग्रह से ली गई है।

सपना

देगलूर महाविद्यालय, देगलूर

मेरा एक सपना है
एक दिन
हर एक घाटी ऊँची हो जाएगी
हर एक पहाड़ नीचा हो जाएगा
बेढंगे स्थान सपाट हो जाएँगे
टेढ़े-मेढ़े रास्ते अख्तियार कर लेंगे सीधापन
मुझे आशा ही नहीं
पूर्ण विश्वास है
एक दिन सूरज पश्चिम से उगेगा

उस रोज़ परम्पराएँ टूटेंगी
निराशा के पर्वतों से उतरेगी बर्फ
कलह और कोलाहल जेल जाएँगे
हर तरफ सिर्फ एक ही बात होगी
न्याय और बन्धुता

समानता और सम्पत्ति पर सबका हक है
हम स्वतंत्र हैं
हमारी आजादी का सपना पूरा हो चुका है
हमारा देश महान है
इसकी परम्पराएँ अक्षुण्ण हैं
एक ओर गुजरात उठेगा
दूसरी तरफ महाराष्ट्र
नागालैंड और सिक्किम की तरफ से आएँगे लोग
गले मिलेंगे, ग्रीट करेंगे एक दूसरे को

हर शहर आजाद होगा
हर गाँव जन गण मन

गली से उठेगी आवाज
वन्देमातरम!!! जयभीम!!! लाल सलाम!!! जोहार!!!
कोई चमड़ी के रंग से नहीं पहचाना जाएगा
किसी की पहचान उसका टाइटल नहीं होगी
बुधिया बस्तर की लाल पहाड़ियों से लाएगा पलास के फूल
गूँथेगा अलबामा की चोटी
छोटे-छोटे लड़के हाथ थामकर
संविधान को सल्यूट करते दिखाई देंगे
मेरा एक सपना है
यमुना के घाटों पर बछेड़े फुर्री मार रहे होंगे
आजादी की खुशी के बीच
एक दिन...